श्रीनंगलालिनभावात्मकग्रंथः।

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gattulalaji Research Centre

0.5

त्रि.व.टी.
१

॥श्रीकृष्णायनमः॥ ॥नमःपितृपदांभोजरेणुभ्योयत्रिवेदना
त॥अस्मत्कुलंनिःकलंकंश्रीकृष्णेनात्मसात्कृतं॥१॥अबठाकुर
कोस्वरूपैं॥वर्णनुकरियतुहै॥ताकोंनमस्कारनाहीकरियतुओर
श्रीमदाचार्यजीकोंनमस्कारकरियतुहै॥सोकाहतेंतात्पर्यकहा॥
याकोतात्पर्ययहजोवर्णनीयहैरसात्मकत्तावात्मकाकोमात्मकत
त्ररदजालसन्नगवत्स्वरूप॥सोतोश्रुतिनिकोंअगम्यहै॥श्रु
तिनोंवंदीजनहैंठाकुरकोबाहरकोमाहात्म्यदेखतहैंसोकीर्त्ति
नवर्णनकरतहैं॥ठाकुरकेधर्मकुंवर्णनकरतहैं॥ठाकुरकोमू ॥१॥

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji

त्वधर्मिस्वरूपअगोचरहेंश्रुत्योकुंतातें॥यतोवाचोनिवर्त्तंतेअप्रा
प्यमनसासह॥सोऊपरलिखेएतादृशरसात्मकठाकुरआधिदेवक
विरहाग्निकेआस्यरूपहें॥श्रीमदाचार्यजीतातेंवस्तुतःकृष्णएव
स्वीनावोगूढतातेंएतादृशरसभावात्मकठाकुरकेमुखरूपहेंश्री
मदाचार्यजूतोपेहेलेंएतादृशभावस्वरूपश्रीमदाचार्यजूकोहृद
यसरोजांत[illegible]हृदयमेवैंआवेंतोतादृशभगवत्स्वरूपवर्णन
कीयोजाय॥तातेंप्रथमश्रीमदाचार्यजूहृदयमेंआयेतापाछें
श्रीमदाचार्यजूकोंरसमाहात्म्यहृदयमेंआयोजोएतादृशरसभा

वात्मक ठाकुर के आनन रूप हे ॥ अब श्रीमद्गुसांईजू कहत हे ॥ जो एतादृश साक्षात् श्रीमदाचार्यजू कों नमस्कार करिवे कों मेरी जोग्यता नाहीं ॥ तातें चरणारविंदन की रेणु कों नमस्कार करत हों जो ते श्रीमदाचार्यजू ने श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि कों दैरागार प्रत्यक्ष श्री ठाकुर विषें निवेदन कीयो ॥ तब ब्रह्मसंबंधकरणात्सर्वेषां देहजीवयोः ॥ सर्वदोषनिवृत्तिर्हि ताकरि है मारे सर्वकुल निःकलंक भयो तो मेरो पुत्र हों ॥ जैसें परनाले को जल गंगा के संबंध तें गंगा ही होइ निवड्यो तैसें जीवरूप पुरुषोत्तम ॥२॥

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalaji

ष्णकेसंबंधतेंसर्वदोषजीवकेनिवर्त्तहोयशुद्धब्रह्मरूपोत्तमहोय
यामेंसंदेहनाही॥तवश्रीकृष्णनेहमारोनिवेदनश्रीमदाचार्यजूकेसं
बंधतेंस्वीकारकीयोहमारेप्राणप्रभुनेआधीनकरिआपुजेसेकी
ये॥श्रीकृष्णनेआत्मसात्कारकेंकहेजोहमकोंभावरूपफलदेवेके
पात्रकुंसंपादनकीयेंऔरभावकुंदीयेसाधनकुंदीयेथे॥भावोभा
वनयासिद्धे॥भावहीसाधनपेंफलतेंहूंअधिकहे॥तातेवेदादिकअ
गम्यस्वतंत्रवेदातीतस्वरूपकोवर्णनकरितुहे॥अथवा॥श्रीमद्गु
साईजीकोकुलसंपत्ययहदिखाईयतुयहीहे॥केयातेंआगेंकुंवे

2.5

छूहेतहांकहतहें तो श्रीमद्गुसाईंजीकोकुलसमस्तसीयालीला
समाजमेंतेंअलौककविरवेस्वकीयजगत्तदेवीसृष्टिकेउद्धारार्थआ
विर्भावनयेहे तातें लीलामध्यपातिनित्यसिधा श्रीगुसांईजी
कोकुलनिःकलंकः ॥ श्रीकृष्णकरिच्छापुंजेसे कीयेहें ॥ हमारोकु
लजोलीलासमाजमध्यपातिनिःकलंककरुष्मनेआपुन्नसेंक
निं ॥ १ ॥ वामनान्वताश्रितातिवक्रदक्षिणभानुकं ॥ एतत्संप्रा
प्तसौभाग्यविचित्रमणिभूषणं ॥ १ ॥ वेदभगवत्स्वरूपकोव
र्णनकरतहें ॥ सोसिरवातेंआरंभकरिनखलोंवर्णनकरतहे ॥ २ ॥

सोधर्मसहितमाहात्म्यवर्णनकरतहे औरहीस्वांमीस्वामिनी॰
जीयोकीसमानतीनव्यसनवानूसखीवेदादिअगम्यवेदांतीतस्व
तंत्रश्रुतिपुष्टिपुष्टिनावात्मकरसात्मकोनंतरदलस्वरूपनख
तेंसिखवालोंवर्णनकरतहेयहस्वरूपमुख्यस्वामिनीयोकेएक
अनुभवैकवेद्यहे वाचाकोंमनकोंविषंनाहीसोश्रीस्वामिनीहृ य
दयगतगूढस्थायीभावहे तिनकोअनुवाद श्रीमद्गुसांईजीव
र्णनकरतहें तोकदाचित्कहोजेवेदादिअगम्यहेसोश्रीमद्गुसा
ईजीक्योंजानतहें तहांकहतहेंजोश्रीमद्गुसांईजीतोश्रीमदा

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Chitturlalji Research Centre www.vallabhacharya-sagara.org

चार्यजीकेनिवेदनकेसंतेतदीयअंतरंगतमभयेहेंतोअंतरंगदा
सीहोयसोतोसर्वज्ञानेहीतोताउपरांतफेरिभावदानकीयोतो
भावतोभीतरअंतःस्फुरणकोधर्महेंओरभगवत्स्वरूपरसात्म
कभावात्मकहेंतातेंभावात्मकठाकुरसोभाववानभक्तवश्यावा
नूक्लेशावानहृदयमेंसोभावकरहीजानिवेकोंयोग्यहे। तातेंश्री
मद्गुसाईजीमेंभावआयेतेंभावनेजोभागाकीयोतेभावकेविव
शहोइकहततहेंआपुनेवशतेनाहींकहततअवएतादृशमहारसा
त्मकतत्त्वरदलभावात्मकप्रभुकोप्रीतिकोविषयतीनहूँभावात्म

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji
www.vallabhacharya-granthagara.org

करसात्मकहेंतामध्येएकयूथतोमुख्यस्वामिनीजीकोनित्य
सिद्धाकेजूथसोकलिंदीजूताया॥तत्रप्रभुचरतीपुष्टपज्जांगो
पकंन्यायहहहत्त्वामनपुराणनेश्रुतरूपोकुंदर्शनन्नयोसो
व्रतमध्यस्यापेंव्रतकीवेणाहीनिर्गुणायहतोबाह्यांत
रनेदेनत्तोअहर्निशसाक्षात्ठाकुरनोगहेतिनकीतोएक
स्वामिनीजीयाकेनिकुंजन्यारेन्यारेहेतोएकेकस्वामिनि
योकीसमानशीलव्यसनवानसीसोसयोकेजूथानन्त खी२
ख्यहेतेसखीयोकोपरमसमरत्तयहीहेंजोठाकुरजंकेयो

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gattulalji Research Centre
www.vallabhacharya.org/aganahara.org

गप्योगपस्वामिनीयोठाकुरसोंएकझोय्यापरसंजोगकेरिदेहि
औरआपउनदोऊनकोनिरन्तरविगाढसुरतकेलिकरतश्र
मजलकणिकाहोतहैंतहांगादीहोयवायुव्यंजनचमरव्यज
नकरतहैं॥औरजबदोऊस्वरूपसंयोगसुरतकेलिमेंलीन
होइजातहैंतबअनुसंधाननहोइतातेंन्यारेकरतहैंफिरिन्यारे
तेंअत्यंतविगाढविरहव्यापतहैंतबहूंअनुसंधाननहोइता
तेंसंगमकरतहैं॥इनसखीयोकोंअंगसंगतेहूकोटिगुण
अधिकरसमसुखकोअनुभवयहसखीकरतहैं॥कवहूंक

ठाकुरकुंजांतरपाउधारतहेंतबऔरकुंजोकीसखीऔरकुंजनकीस
खीसोंसबमिलिपरस्परवार्त्तापूछतहें।कहतहेंकथ्यकथयस्वामिन्या
सेवत्यैनवसंगमएतादृशाआदियहेंतिनअधिकारिणीरूपश्रीस्वा
मिनीजीऔरौकीसखीयोकेपरस्परवचनतामेंतउक्तासकेयूथपतिसोंमु
ख्यश्रीराधिकाजू॥१॥औरदानलीलाकेजूथपतिमुख्यश्रीचंद्रावलीजू
उपनिषद्रूपाअनन्यपूर्वा॥२॥औरव्रतचर्याकेजूथपतिऋषिरूपाअ
नन्यपूर्वाकुमारिका॥३॥येतीनोस्वामिनीजूथोकेभोग्यत्वेनठाकुरप्र
गटभयेहेंइनकोगूढभावकोनिकेवर्णकहनभावात्मकरसात्मकरे

Department of Shri Gusainji Pt Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhacharyasagarsahara.org

त्रि०ल०टी
६

रनकीसखीयोकेवृंदसमस्तरअनुवादकरतहै॥ इहांलीलाजोपीठिका
अथमूलश्लोक॥ वामजान्वंतसोघुटीकोकूपरजेसोघोंटनकेनीचेलोजें
न्वलअोरवाकेमजेअरुपुष्टिवायोवरलकेजोनोहपरिस्थापित॥ ताकेअं
रविषेघुटीकेनिकटवाईअोरआश्रितहै॥ आत्यंतिकचक्रपरावृत
दक्षिणजानुअग्रायसंजोपुष्टिमार्गकोस्थापनअोरमर्यादामार्गको
उथापन॥ सोआत्यंतिकवक्रताहीकेअनुर्लकरिविचित्रभावके
संतानपरंपराउपजतहैकाहेतेंजोवासरव्यबधादिविखैहीदक्षि
णचरणतलसेंअत्यंतवक्रपरावृतहोतहैंताखुरनकेलिसमयस ॥६॥

खीनक्कंदेनैंखेहेसोंआवचिन्नंगललितसमयवक्रजोजानुकीदेख
नतेसंबबंधोकोसुधिआवतिहेतवभांतिभांतिकेविचित्रजावउप
जतहेजोयहबंधविरचेएसोदेख्योसेसबबंधोकोसुधिआवतिहे
अत्यतवक्रदक्षिणजानुकेलिऐंपुष्टिकरतहेपोखतहे॥केलिऐं
पयोगिमर्यादिदक्षिणजानुमर्यादाधर्मस्तुपुष्टिचरणकेआश्रम
यकरिरहेहेकेहेवामप्रपदस्यवामतःप्रकटंचीयेश्लोकमेकहे
शुद्धपुष्टिपुष्टिकोआश्रयकीयोहे॥एताहृदावाक्किमाजानुतेमहा
विचित्रमणिकेनूपर॥सखशिखावेछुवापायलफूल॥नूपुरजे

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gattulalji Research Centre
www.vallabhacharyagnihara.org

हरियकृहतोबाह्याभूषणसोभालाहृत्राभूषणऔरआंतरियभावात्मक
भूषणजोभालाहृत्राभूषणायहतमधुरवालिकारिअव्यक्ताछंदकरि
अभिसारकरिकुंजमेंपाउधारेगेसबसखीकोपरमसौभाग्यसीमस
मस्तपाइकाहेतेंजोठाकुरतोभूषणोकेपरमभूषणरूपअंगुहैंता
तेंवामजानुकोआलिंगनकरिदक्षिणजानुसमसुरतकोनोतादृश
कुंदेरवेमणिवेधादिकसौभाग्यपायो॥ नखचंद्रमहःक्षिपितनक्त
संतापसंततिं॥ विचित्रभावसंभावनाविचित्रीकृतमानसं॥३॥ न
खचंद्रमाकेजोमहःकांहेंतेजप्रकाशकरिक्षिप्तकहेंदूरिकी

नीहेंनक्रांनिकेसंतापकोसंततिपरंपराकुंवासनाहुंनेहरिकीनीजोआ
गेंसंततिसंतापकोउपजेहूनाहीं॥ काहेतेंजोचंद्रमानोंतापरेंहारक
हेंलातें॥ पेंहलेंतोयहविगाढविरहरसभावात्मकअंकुरकोदेखतहें
तापाछेंयहींउन्नरदउरसभावात्मकस्वरूकोंतडित्वलतान्यारेंबना
हरिप्रागटसर्वइंद्रीयकोंआस्वादनकरावेंगे॥ एतादृशआपकेवामपर
वलजानुकोंदेखिकरिविचित्रभावकेसंतानपरंपराकरिअंतःकर
णविचित्रभयोहे॥ अबविचित्रभावकोस्वरूपकहा॥ जोनखचंद्रए
तादृशसुंदरआरक्तकिनारतामेंसुंदररेखासहितइफिरिश्रीस्वामि

Department of Shri Gusainji Pt. Gattulalji Research Centre www.vallabhacharyavagdhara.org

नीहृदयस्थितकुचकुंकुमकरिलिप्तसाई ॥४॥ औरव्रजलक्ष्मीनकि
करिपूजित ॥५॥ एतादृशसर्वरसधर्मसंयुक्तदेखिकरिअंतष्करणमें
विचित्रभावउपजतहेजोएतादृशचरणकमलकुंबंधविशेषसम
यचुंबनकरियेतसस्तनउपरस्थापियेआजाविशेषबंधविरचज
हांचरणकमलआवतहेतहांस्थापनेकेभावमूर्तिवंतआगेआइ
हाथजोडिखडेरहतहेओरभावतोनित्यहेतातेजिमततनेविचित्र
भावतिनतनेविचित्रहृदयकोविचित्रकीयेहे। औरकूजोसूए
धेचरणहोयतोतोनखचंद्रकीमितेजनकेजोनखकेऊपरके

ऊपरहीरहेपसरेनाहीइत्योंवक्रताकरिनखचंद्रसोयेनाहींगाढहेजेमेआ
धिदैवकमहामणिआश्विनमासकेपूर्णमासीकोंतेसेसमुद्रमेराखियेता
कोतेनचंद्रमाकीज्योतिलोंणकताहोइज्यायमहाजोंलेतोमावर्णहूंतामा
णिककोहोमोलनहोइ॥ तेसेनरूचरणतेंनखचंद्रकेकिरणनकोंवृ
हृदयगामीहोयजीनरकोंभावेष्टहोतहे॥ तातेहृदयकेसंतापकेसं
तानकुंहूदूरिकरतहे॥ओरहूनखचंद्रजिनाकोंषद्पणेंदुमणिप्र
नः॥ यः श्रीनखचंद्रकेमेहेजोजिनजीनेकेंअशोपक्षनंतदर्पण॥ओ
रचंद्रमा॥ओरमणिकीप्रभाकोंजीतिकरितुच्छअप्रयोजककरिडा

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalaji

रेहे ॥ ३ ॥ दक्षिणपदतलेऽस्त्रं वामप्रपदस्य वामतः ॥ वकट सोदर्यं कि
मपि तरां प्रकटयति प्रेमवत्त्वं ॥ ४ ॥ अब दक्षिण चरण वक्र हे ताते
तल उघाडो हे तातें जविखे जो कमल हे चिह्न सहित सो वायें चरण के अ
ग्र नाग तांई वाई ओर पुष्टिलीलाकी ओर उ घाडो हे चटी अंगुठा के पा
स दक्षिण चरण तलकी पेहली अंगुरी पास कमल उघाडो हे ॥ याक
मल धारिवेको आशय यह जो कमल तो अगाध जल के सरोवर में हो
य या करि यह सूचित कीयो जो हे चरण सरोवर में अगाधि रासिर
सरसाई है सो रसनस्यो हे सहज जनायो ॥ अथवा ॥ दक्षिणपदत

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gokulotsavji

लहीहें आरक्तकमलस्वरूपहीहे सोपुष्टिपुष्टिके॥ आश्रितहे॥ परा
ह्वतनेतरकोडोदेखियतुहीहे॥ अबतत्त्वराजी॥ अहोहाहातेएकेले
एलाहृशाचरणकमलकीसौंदर्यलावण्यतामाधुर्यताकमनी
यतामधुरंमधुरःपादोमधुरः॥ सौंदर्यताकीअगाधिसमुद्रकोसी
मदेखिकरिदीनताआयीजोएताहृशाहमकुंकहायहतोपर
मप्रेमवंतहुस्वश्रीस्वामिनीजीजोंजीठाकुरकुंप्राणतेहुअत्यंतव
ल्लभप्रेमवंतहेंतहांहीयचरणारविंदप्रगटकरतहे॥ चरणानां
स्वरूपमाह॥ वृंदावनेसंचारिणोविलसनोतकीश्रीः केस्वलंतरमे

Department of Shri Gusainji Shri Gokulnathji Research Centre www.vallabhacharyapragamhara.org

देखतअनुसंधानकरणेतताहृद्यासौंदर्यतासोंतताहृद्याप्रेमवंती
कुंहीएकअनुभवैकवेद्यहेऔरकोऊनाहींजानत॥४॥विकाशि
तशारदकमलोदरमदहरणेपिनद्धाक्षाकं॥वहतानिरवधिरसता
निवेद्यतेस्त्रीयनक्षेषु॥५॥जैसेविफूल्योशारदकालरितुकेसुखांत
कमलकेगर्भअंतरवर्त्तीजोकोऊएकपरमकाष्टापन्नशोभातांकुंतो
पराजयकीनीजोतोतिनकीसोभाकेमदगर्वहरपाछेइहांपद्यांकथ
रिबेकोकहाप्रयोजनजेतुछअबसोककरिडाख्योतोफिरिता
कोचिन्हकाहेंकुंधरतहो॥याकुंजीतेपाछेखाडोअघाडोकाहेको

उक्तर॥ यातें धरे हैं वेरुत हे॥ जो आपुने अंगीकृतन भगवदीयकों जनाव
नकों जो चरणारविंद विषै निरवधि अपार अमर्यादा रसालतावन
कूं जो मैं कमल तो जहां निपट ओंडे गहरे रसजल होय तहां होय थो
डो जल मों न होय तातें यह चरणारविंद में अमर्यादरस हे चोथे श्लो
कमें सो पद तल ही कमल रूप कह्यो और पांचमें श्लोकमें सो पद्मको
चिह्न कह्यो सो कमल दक्षिण चरण की पहेली अंगुरी के निकट
धरत हे या आकार ॥ ५ ॥ भक्तार्तिहरणे काचिन्मर्यादा नैव मन्यते
इति ज्ञापयितुं वज्ररेखां धात्त्यातिस्फुटं ॥ ६ ॥ भक्तन की आर्तिहरण

विखेंआर्त्तिछेदकरणविषेठाकुरलोकवेदआपुनीस्वरूपमर्यादाआ
त्मारामत्वआप्तकामत्वआपुनीप्रमेयमर्यादाकूं,नाहीमानत॥ स्मरग
रलखंडनंममसिरसिमंडनंधेहिपदपल्लवमुदारं॥ ज्वलतिमयिदा
रुणोमदनकदनानलोहरतुतदुपाहितविकारंप्रियेचारुशीले
प्रियेचारुशीलेमुंचमयिमानमनिदानं॥ मानाप — स्वपाणिपातक
रितदाधीनलेनहीयस्वरूपमर्यादाकूंछेदनकोमित्रठाकुरद
क्षिणचरणतलकीटचीआंगुलीकेपासवज्ररेखाप्रकटधरत
है॥ वज्रकेआकारइंद्रमेवज्रकरिवृत्रासुरकोपेटफार्योहोपर

बतकीपांखकाटीही॥६॥ अनुग्रहानिलोयश्चनन्तासुखव्यजनश्च
जगू॥ अन्याश्रोरजनतेनक्केपदमेवमितिध्वजः॥७॥ नहांजानकिविखे
वाकारके अनुग्रहरूपयोजोवयारि लिहांजानक्कके सन्मुखनज
तहे॥ ओर ओर सर्वदिसाकूं कोत्यजनतहे ध्वजाको फरहरा॥ सवा
रकी ध्वजानक्कि रूपचरणारविंदविखेसोंभायमानविराजत
हे या आकार॥७॥ धारयन्नुज्ञापयत्येषत्वत्कृतान्यादिकर्म
भुः॥ प्रपतनाद्वहिसत्मेव्योनिर्दोषगात्रविग्रहः॥८॥ कमलव
ज्र॥ ध्वजा॥३॥ अंकुश॥४॥ सहचारूध्वजवज्रांकुशाम्भोज

11.5

राजच्चरणपल्लवयस्मारूढधरिकरिइनोनंदकोंकृपयाउत्तणाव्रतहेजो
ठाकुरतोऔरकर्मज्ञानउपासनाविहितभक्तिआदिअन्यसर्वदि
शाकोपरित्यागकीयोहेछठिपुष्टिविशिष्टभक्तिव्यतिरेकऔरदिशा
कुंठाकुरजाननतहूनांहीतानिश्चयकरिसंतेभगवदीयोनेएतादृश
निर्दोषपूर्णगुणविग्रहठाकुरसर्वात्मभावा [illegible] करिसेव्यहे ॥ ७ ॥
प्रथमश्लोको ॥ ४ ॥ करितोएकीलेधर्मीचरणकमलकौसौंदर्यताव
र्णनकीनीतापाछेमनजेहेसोमन १ ॥ चित्त२बुद्धि ॥ ३ ॥ अहंकार ॥ ४ ॥ च
तुष्टयआत्मकहेऔरमनकोधर्मतोसंकल्पविकल्पात्मकहेमहा ॥ १२ ॥

चंचल हे तातें पाछें श्लोक ॥४॥ चारि करिनें चरणारविंद विषें लीला
के लिउपयोगी धर्म करि चतुष्टय मनकुं हरि आपुनें आधीन कीयो
भक्तन मन तो कमल दिखाइ चरणकों सारसता जनाय श्रीनलकु
रो अपने वश आधीन कीयो ॥५॥ तापाछें चित्त हे सो न विष्यकों चेत
न करि शुद्ध करि मुक्ति करत हे तब मिलवे की आतुरता करि आर्त्ति हो
त हे तब ते आर्त्ति हरण विषे सर्व मर्यादा छोडनकुं वज्र रेखा प्रकट
धरि जावत हे ॥६॥ तापाछें बुद्धि जेसे सो विचार करि निश्चयात्म 12.5
क हे सो बुद्धि निश्चय सेव्या हे ॥ सत्पदपंकजमधुमत्तस्यायं निसर्ग

एवाम्भूत्त॥ नैतान्भावमतनेयदंकुंश्रोनित्यमेवास्ति॥७॥नवचरणवि
रविंदध्वजादिरवाइनिर्नयार्थनियोजेसेमनक्कजादिरवेनयोजेसेंमनक्कणता
हृद्देशानिश्चेअंतष्करणमेजवनिश्चयकोनोजोमोकुंतोयहीदेशपूर्ण
वियहीमंडागाड्योअनुग्रहरूपीवयारिणताहृद्यानिश्चेंअंतष्करणातो
रिक्ताकाहूकोंजातहीनाहीसोकाहेतेजोजानेचरणकमलजोरवेनित्यअंकु
शाहीरहतहोहेजेसेंउन्नमदहस्तीकुंअंकुशवशकरतहेतेसेंउन्मत्तअहंका
ररूपीहस्तीकुंयहचरणारविंदस्थितअंकुशनेहस्तिआधीनकीयोहे
॥८॥कदाचिद्विविधालीलाकर्तुंनकैःसहप्रभुः॥एवंभूतोवादयति

वेणुमिष्टंकरोतिन्वा॥१॥सदासर्वदासोठाकुरभक्तनिकोंनिर्बंधकरित
दधीनत्वेनतन्मनोरथपूर्त्यत्वेनभक्तमनुःसाक्षल्लीलासंयोगात्मकप्र
र्वतप्रभुकरतहे॥औरकदाचित्सोठाकुरआपुनीमनअभिलषितभ
क्तनिकोंऔरआपुकोंअनुसंधानरहिततन्मनहोइआपुनोमनोरथ
पूर्त्यकत्वेनकरेहेविपरीतसुरतकोंअंगीकारकरावतहेयाठाकुरभक्त
निकेसाथअविधवधादिलीलाकेलिरतिकलिकेअत्वरदलात्मक
स्वरूपप्रकटकरियाप्रकारललितत्रिभंगहोइभक्तनिकेविवेक
धैर्यदृष्टिकुंभंगकरतमेंनसंस्वरूपवेणकुंवजावतहूहेऔरआ

13.5

पुनोऽच्छवांछितरूपकरतहे वेणुहेसोउच्चरदलनस्वरूपहीहेवर्हापी
डश्लोकात्तकआतेंस्वरूपमेवरणनहे॥ओरहूंसदासर्वदासोश्रीस्वा
मिनीजीकीओरवाकुंअरअत्यंतप्रसन्नहोयतद्भोग्यत्वेनकोटिक
सौंदर्याधिकलावण्यप्रकटकरिप्रकटहोतहे॥एतादृशवाकुंअर
कुंदेखतमात्रज्योंस्वांकेलिकोमनोरथउपजतहेंसोइकोटिप्रका
रबंधादिकनुबंधनआलिंगनादिककीउत्कंठावढावतहेसोवाकु
रउनकेनेत्रतेंज्ञानशक्तिकरिजानिलीनतातेंअधिकहूपूर्णकर
नजानतहें॥ओरकवहूंकसोवाकुंरआपुनीप्रियकीप्रितविविधप्र

इष्टफलहूकरतहे एताहृशाचित्तअंगरूपदेखि श्रीस्वामीनी×उत्तीय

निर्वचनीयलीलानकूनिसाध्यकरिबेकीइछाकरतहे। आपुछ्वानीष्टसा
नकूलविपरीतनात्यनात्यकीविलक्षणकेलिकरिबेकूंइछाकरत
हे॥ तबयाप्रकारललितत्रिभंगहोइवेणुहूवजाइनकूनिकोआ
कानसाधनहूकरतहे श्रीआपुनोंजीयोकूं श्री[illegible]पनोमनोरथतो
भूलिजातहे॥ याकूं जोअसाधारणरसप्रकटकरतहे सोदेखियाकू
रकुंजोजोवांछितनवधादिकइष्टतायेहूअधिकहूरतजातहे॥१०॥
प्रथमचरणारविंदकीसौंदर्यतादेखीहेसोहाकोवर्णनकरतहे॥ प्रप
दोपरिसंचारिचारुपीतांबरांचलः॥गुंजन्मद्भ्रमरयुग्वनमालाति

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhcharitra-agrahara.org

चि·ज·टी·
॥१५॥

सुंदरः॥१९॥ चरणारविंदकीपटलीऊपरहरेंहरेंवायुकरिफरहरातहे
अत्यंतसुंदरपीतांबरकोरंवूटआच्छाययहजोरसतोआछादितहीरस
कुंभाणिहोतहेजातेंऊपीतांबरकरिकेरसआछादनकीयोहेकेंव
तेजेचरणाविंदजोलंवायमानसुंदरसातरंगकीसुगंधपुष्पकीवन
मालाकीत्रमयीघेहेरीहेविक्षेपात्मकजोरससमद्धिनरहे॥ एतादृश
सुगंधवनमालाकीसुबासयाछेजागेभ्रमरगुंजारवशब्दायमानकं
कारात्मकरदयीयउन्मत्तहोयगोकुलेशकीत्रिगुणगानकरतहे॥
वनमालापरवेचतनाहीनिकरगुणगानकरतफिरतहेजातेंकात्रिगु ॥१५॥

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gattulalaji Research Centre

गंधकीनाईवोहोनहूरिलोकिलायतातेंसुंदरवनमालाकेपुष्पको॥आ
मोदमकरंदपीकेमत्तहोकेगुणगानकरतफिरतहै॥११॥ घनश्याम
श्रीअंगहैसोतमिश्रितअभिसारअष्टपैरानिविडरात्रिविखेंदूरि
तेंजान्योनाहीजाततातेऊपरस्वेतपुष्पकीवनमालाकीर्तिमयीश्री
स्वांमिनीजीनेपेहेराईहै॥ विविधरूपसुचारुगंधयुक्तसुपुष्प
वयैरतिसुंदरं॥ ग्रथितमध्यमदेशमपिप्रियाकरैर्युगेनहदिस्वामि
जिकार्पये॥१२॥ तामालाकेपुष्पएकतोअनेकभांतिकेविचित्रहै॥१॥रू
पअत्यंतसुंदरमनोहरतमहै॥२॥ औरगंधपरमसौरभआमोदवंत

15.5

त्रि. ल. टी.
॥२६॥

आमोदसंयुतहे॥७॥ओरस्पर्शपरमकोमलतेंकोमलतमहे॥८॥एतादृश
रूपरसगंधस्पर्शसबरससंयुक्तएतादृशपुष्पकेसमूहकरिआत्यंत
सुंदरमनोहरवनमालाकेमध्यदेखावेहेंभांतिभांतिकेरंगलालऊदासीं
पांडुआदिकेपुष्पकेबीचबीचकदीयेहेसोचरणसुंलागतएतादृश
कीत्रमेवनमालाश्रीस्वामिनीजूनेआपुनेदोऊश्रीहस्तकमलकरी
गुंथीहेअरुअंतसवारिमवारिमालाकेमध्यथागुथेहेजोबंधविशे
षविषेमेरेहृदयविषेश्रीचरणकेसाथआवेयहमेरेहृदयमेकाम
नाकरिप्रियाजूनेगूंथीहे॥अथवादूसरोव्याख्यान॥ठाकुरजीकी ॥२९॥

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji

कित्रिमयीमानायहजोश्रीस्वामिनीजी काचित्समंमुकुदेनस्वरजातीःअमि
श्रिताउन्निन्येपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति॥ यहएतादृशगुणगान
रूपकीर्तिमायीमात्रागुथीहेयहसखीकेहृदयविखेरहोयहकामनादे
११॥ अबयहतादृशवनमालासोवाकुरकेकोकोनकोनअंगसोंला
गिविहारकरतहैसोकहतहे॥ ग्रीवोरःस्थलकटितटकांचीजानुप्रप
दयोः॥ संततांबिभ्रतीवनमालासकासीदलिकुलैर्मत्तैः॥१३॥ वनमाला
केसीहैजोउन्मत्तभ्रमरकेसमूहजोकेसुऊँआसक्तिहोयगुणगानक
णत्कारकरतलागेमिलेफिरतहेएतादृशीवनमालायीवासुं॥१॥ उरस्थ

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhkankroli-agrasharan.org

॥ त्रि. ज. टी. ॥
॥ २७ ॥

लसुं २ ॥ कटितटसुं ३ ॥ कटितटके नीचेकुं ४ ॥ दोऊपदोको जानुकुं ४ ॥ छुद्र
घंटिकाकुं ॥ ६ ॥ आगे चोरलागी निरंतर विहार करत हे ॥ हमकुं तो कबहुं एक
अंगसुं करि विहार नाही करत ॥ १३ ॥ नाभिते ऊपरते अंगथी वाते आरंभक
रि वनमाला करि सो नानिरूपण कीनी ॥ अब नाभिते आरं नीचेकी सोभा
कहत हे ॥ गंभीरनाभिविलसत्काञ्चिदामलसन्मणीन् ॥ स्खलद्धारोच्चयत्रय्या
नप्पाकल्यानलसैस्तुः ॥ ओडी नाभिनीचे विलासकुं करत छुद्रघंटिकाके ज
टकते संततापरिशोभायमानाहे अमोल्यमणीनू ॥ छुद्रघंटिका कटिपर वा
धीहे ताको लबीदाम ते त्रिवली निकेतं गयोहे ता तें छुद्रघंटिकाके लटकें ते क ॥ १७ ॥

Department of Shri Gusainji Pt Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhacharyagranthagara.org

परकालेमणीनोऊपरतेकोद्येवलिकुकिंआईहेतामहिलिमोनिसोठाकुर
कीश्रीअंगकीकांतिकरिमणिनशोभायमानहेजेसेएकसूर्यपरदूसरो
असाधारणसूर्यआयेतेकेसोकांत्कारहोइतेछुद्रघंटिकाकेमणिपरश्री
अंगकीमहाकांतिकरिमणीनशोभायमानहे॥औरहूसबआभूषणोंको
याप्रकारआपुनेश्रीअंगकीकांत्यकरिसोभादेतप्रभुःसोभितनये
१४॥अबउपरेनाकोसोभादीनीहेसोकहतहे॥येगुण[illegible]नसंचा
रचलत्प्रांतातिसुंदरा।उत्तरीयविनंदेतोव्भुमेजिनलोहरि॥१५॥शीत
लमंदसुगंधवयारिचलतिहेतासोंउपरेनाकोंजोधेपरधस्योहेताके

दोऊ अंचल जो चुनि कें धरि आगे दोऊ पासे में फुदा हरावत हैं सो वायक
रि अत्यंत सुंदरतम होइ जैसें अंचल के प्रांत चलत फरहरात हैं ता करि
ता तें अत्यंत सोभायमान है वा कूं ॥ १५ ॥ अब दोऊ श्री हस्त कमल के आ
भरण सहित सोभा कहत हैं ॥ विविधमहामणिस्वचितैं परितो मुक्ताफला
वलीयथितैः ॥ वलयांगदकंकणचयसकलांगुलिमुद्रिकाराजे ॥ १६ ॥
श्री हस्त के आगें आगे तो चूडा तडावना पाछें वलय गजा और चूडा के पा
छें नाना भांति के वो होत तडाव के कंकण एला हृश सर्व के आसपास
ब और गजमुक्ताफल की पंक्ति गुही है और भांति भांति के महामणिक

रिज्ञडितहे।ओरसबअंगुरीनमेंमुद्रिकाभूषणओरपोहोंचेपररतनचोक
एनादृश्यमानभूषणकरिसोभितहे।अबवक्रिमालयुक्तकटिकीसोभाकर
तहे।कट्याकुटलयाकांचिद्बुद्धवत्स्यमोहिनी।।करोतिसुषमानाम्न
सहसाम्येतिदुर्लभं।।१७।।तेकटिकेअनिर्वचनीयकुटिलवक्रताकटिसो
कोऊएकसोंदर्यताकोसुनवेंकेवेद्यहेसोसोभात्रिभुवनमोहनीहेसात्वि
कीराजसीतामसीभक्तनिकोंओरस्वर्गमृत्युपातालत्रिभुवनकोमोह
नीरूपहे।।सोकटिकेवक्रहोननेकनाभिहूवक्रहोतहेसोएनादृश्यो
नाभिसहितकुटिलकटिअनिर्वचनीयसोभाकुंविस्तारतहे।।सोएता

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalaji Research Centre www.vallabhacharya-agrahara.org

॥त्रि०जूब०टी०॥
॥१८॥

दृष्ट्वासौंदर्यसामांसोनासधीनाभिकटिसमविरवेंहृदूर्लनेत्रमहो॥४॥अ
बरसात्मकचंपकुरञ्चाधुमेलेमक्रमेंरसदवेनकेमतहेसोकहतहे॥रस
भरताग्रितपात्रंनामितमन्यच्चतंरसकु[illegible]कतलञानतमुत्तलमेकल
इहदृश्यतेसर्वैः॥कटितटिसुंछुद्रघंटिकाकेनीचेसर्वरसकूहितट
विरवेंहे॥तोपात्रहूरसाढ्यकरिनरितजेसेंक्लम्भमेमाधूतरसरनणाति
भरितामूर्तिः॥तेसेंपात्रहूरसकरिभरततापात्रविरवनस्यौंहूरसही
तातेंपूकहो॥रसात्मकरससेंधवघनत्वाखेनरसात्मकहीस्वरूपएता
दृशपात्रकोंजबदोमरेपात्रमेंरसबारिवेकोपेहेलेरसकेपात्रकोंनवाड॥१८॥

यत्तहेतबाकओरतेकानोनीचोहोतहेइतसरीओरकोऊपोहोयसर्वत्र
देखियतुहेतेसेवाकुररमान्मकपात्रमेतेरसओजरत्नोकुंप्रकटकरि
देखेंहेंकुंचरहेंतातेत्रिभंगरूपस्वेनीवेस्थेहपेहलेरसगुप्तहोसोअव
कटिपरछुद्रघंटिकारूपहानसोधिकरिनिपीडिनिष्पीडनकरिरस
वाहिरप्रकेटकरिदेखेंकुंवक्रनग्नयेहेंनिचोडितत्नोकाटनानिस
हितयीवाजानुप्रपदवक्रहोयतोहीरसबाहरप्रकटनिकसतो॥१८
अवकटितटरससमुद्रकेतटविखेंनौयेकुनावचल्यो॥कटितट
भावरसानीव्रजांगनाहस्तमुरवरसोंभापि॥अनवत्नथैवकहृष्टाहृष्टापर

मधुपपद्यनेको व्याख्यान। यहसबभावात्मकहीस्वरूपकोवर्णनहे
तातेंकटिलटकेनीचेंजोताकेबंधादिककेजोअनेकभावताकोहृदय
नेकरसतारसकोहूसाक्षात्कारअनुभवओरनेहूकोटिगुणोअ
धिकएताद्दशभावकेरसकोअनुभवश्रीव्रजांगनाओकेहृदय
विखेंपूरणकरणलियेजेसेकोऊविकटसूरजोधातुकेजोनीपरम
पुरुषार्थसाधिआयेतेआनंदसोफूलेंनेसेंकटिलटकुसबबंधानि
केसावकेरसकुंश्रीस्वामिनीजीकेहृदयमेंपूरिकरिआपहूंआनं
दकरिफूलतभयेहेसोछुद्रघंटिकाकेफूंदनाकुंचेकोफूलिरहेहे

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt Shri Gattulalji

सोकांचीपरदेखी॥रसनिचोडिकाढियतुहैतनवदनकोपाटली
परदामबांधिनेचोडिदेतहैं॥ताहदृशाकृपरकांचीदामपरउत्सन्न
देखी॥१९॥अवकटिकेसीहेसोकहतहे॥वेणुरवानुगयान
वनवचापल्यमनावशापसर्योर्वैः॥व्रजतरुणीमानसधनसंप
न्नयामृज्जगजगलदात॥२०॥कटिकेसीहेजोवेणुरवकेपाछे
चपलहेतेजेवेणुनूतननूतनकलावतीलालकोजातिजोअला
पचारिमेउद्धनीचलहरितानसेपसजातहेताकोपाछेतेजे
सेंतेंसेहीकटितटिकीचालनमूतनचापल्यताकेनावकुपाइ

20.5

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gattulalji Research Centre
www.vallabhacharyapagrahara.org

करि उद्धव नाव कुं कहिं तें तट प्राप्त होति भई ॥ तब श्रीव्रजजन रूपी सुंदरी
के अंतःकरण के भीतर जेता कछू त्रिजगत में चैतन्य और आनंद
हो सो सबही आनंदरूप ध्यान में पल्स व श्रीस्वामिनीजी औ केह
य में आनि एकत्र भयो ॥ वेणु के रव करि जो जगत को चैतन्य हरि
लियो ॥ और वेणुरव को पाछे कटितट की चारु चलनि करि त्रिज
गत को आनंदरूप धन हरि श्रीस्वामिनीजी यों के अंतःकरण में
एकत्र कियो तब तो त्रिजगत में एक विधि रह्यो तातें सारो त्रिजग
त जड की नाई होत भयो त्रिजगत की सुंदरी को उद्दीपन सामग्री सुं

न्यदेखिकरिखअंन्यकरिऔरकटितटचलतदेखिकरिसात्विक
आविर्भावहोतनयोनातेजडताहोतनई॥२०॥कटितटवर्णनकरे
पाछेक्रमछोडिनेत्रकमलकोवर्णनकरतहे॥नयनांबुजसौंदर्यं
वचसांमनसामगोचरमस्यां॥व्रजसुंदरीनयनमनोनुरक्तैकवे
द्यंपरंहृदयं॥२१॥अथमतोनमस्कार॥१॥वामजानु॥२॥दक्षिणजा
नु३ नखरंध्रदक्षिणपादतल५पद्मांक६वज्ररेखा७ध्वजा
८ अंकुश९वेणु१०प्रपद११पीतांब१२वनमाला१३ग्रीवा१४उ
रस्थल१५कटि१६कांची१७जानु१८दोऊप्रपद१९नाभि२०चूडा

21.5

२२बाजूबंध२३कंकणाबोहत२४मुद्रिका२५कुलिनेकटिनाभि
सहित२६कटितट२७एतादृशइहांपेजोवर्णनकरतवेणुवजावत
ठाकुरकीदृष्टिकटितटपररहेताहेयद्यपिमध्यमवनमालाकेप्र
संगग्रीवाउरस्थलनाभिकटितटएकवारवर्णनकीनोहेतथापि
वेणुवजावतठाकुरकेनयनकमलकटितटपरहेंतातेहूदूसरी
वारहूवर्णनकरतनयनकमलपरमनकीजोदृष्टिगईसोइहां
तेष्ठीकतेंनेत्रकमलहीकेसौदर्ययाकोविशेषणहे॥याकरकेने
त्रकमलकोएतादृशअनिर्वचनीयत्रिभंगसमयकोपरमसौंद ॥२२॥

यत्ताहेजोमनकौंऔरवचनकोंतोअगोचरहेयतोवाचोनिवर्त्तं
तेअप्राप्यमनसासहतोकदाचित्कहेंतोतोहोहिंगेहीनाही
नहीकेरूतहेजो॥परसत्यं॥पेहेंस्वरूपकेसेंसौंदर्यहेव्रजसुंद
रीयोकेनयनऔरमनकूंएकहृदयकेनीतरएकअनुनवके
तिहोवेद्यहेकछूवत्तौकेरूकछूवचनकेऔरमनकेंवेश्यणना
ही॥हृदयंकाईपरमसौंदर्यसौंदर्यसीमामधुरंमधुरंनयनंमधु
रंलावण्यामृतकिरनहेंनाहीकौंस्वरूपकाआहेव्रजरत्नविकेहृ
देविरवेंप्रवेशकरीयेतोजानियें॥२१॥सबनेत्रकेहीविशेषण॥

22.5

तत्रापिभावगर्भंलीलारसंप्रियतमामुखांभोजेस्थगितनवदर्शन
तरंगंतंप्रकटानुरागमिव ॥२१॥ फिरिलीलाकेसेहैनेत्रकमल
तेकेगर्भमेंअसंख्यातवंधादिककंदर्पकेभावसूचकरसमना
वक्रंतेरहे ॥ औरकेसेहैअत्यंततरलचंचलतमहे ॥ पेप्राणप्रि
याकेमुखकमलविषेस्थगितहोइरहतहे ॥ वक्रसोकेसेहैअ
त्यंततत्कालकानेनेत्रप्रान्त्यअंचलजाणे ॥ नीलकसेअनुरागहीप्रक
टभयेहेमानो ॥ध॥ २२ ॥ विचित्रवेषाणानाब्धितरंगांदोलितानां
वलं ॥ स्थिरंवातरलंवेत्तिनैतन्मूढवधादितं ॥२३॥ फिरिनेत्रके ॥२३॥

सेहेंनांत्यंन्नातिकेवेणुकेवांकेवाकेतानिकेअंकोडकेसमुद्र
केजेअनेकतरंगताकरिआदोलितजरणोचहोतहेनेत्रकेअं
चलतवअंचलअस्थिरहेकेअथवाचचलहेयहजानिकरिधा
रणाशक्तिनाहीजेसेंअसाधारणफिरकीफिरतहेतबजानीजा
हीपरतिजोफिरकीफिरतिहेकेगाढिहेतेसेंहीवहअतिवेगकरि
अंचलडोलरहताइलेंजानिवेकोशक्तिनाहीजोअंचलस्थि
रहेकेअथवाचंचलहे॥२३॥फिरिनेत्रकेहीविशेषणसोकह
तहे॥स्मितारसभरेणात्मजनोल्लापापोषकै॥:नेत्रैश्चलदे

23.5

त्रि॰ज॰टी॰
॥२४॥

तुर्वन्तिषामिनिनचोप्यहं॥२४॥ नेत्रनहीमेंमंदहासामृतचतु
रहोइसोलखिजायएताद्दशधर्मयुक्तनेत्रकेसहेजोस्मितामृत
केस्रोतिनकरिजोकोकआत्मबाधात्मभक्तकेआत्मागाढ़
रहेएताद्दशभक्तनिकेहृदयकेओरप्राणनिकेपोषकहैंके
अथवाजीनकुंहेतुहेस्मितामृतयहमेंनाहीजानतहास्यरस
हूतउज्वलहे॥ औरअमृतहूउज्वलहे॥ औरअमृतकोधर्म
प्राणपोषकहे॥ जबहीवाहीवाहिसंवेदनतबतोविरहहे॥ता
दृशविरहमेस्मरणआवतहेतबतोंप्राणपोषकहे॥ औरज

॥२४॥

क्षंतरनिष्ठानवतोस्मितामृतहीमेलीनताकोभेदकुंहेतुहै
तातेनाहींजानजोजिवावतहैकेमारतहें॥२४॥ फिरिनेत्रको
वर्णन॥ भ्रूचापःसंधितःकर्णावध्याकृष्टःप्रियाहृदि॥ विद्धः
प्राणानाजहारस्वामिन्नस्मिनूदयानहि॥२५॥ तोश्रीस्वामिनी
जीओकेहृदयओरप्राणगाकुरकेनेत्रनिनमेकोनसाध
नकरिआवतहै॥ जोतापाछेंस्मितारसमेलीनहोतहै॥ तहां
साधनहोइकहतहें॥ एकतोभ्रुकुटीरूपधनुषमध्यनेत्रस्व
पकामबाणकुंवेधिकाधिकेरिलेजातहें॥ तहांनेत्रकुंओ

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhcharya-agrahara.org

रत्नकुटीकोदोऊजनयोंदयानाहीएदोऊबडेरसनीतिदर्ययहे॥
२५॥फिरिनेत्रकेरसकोवर्णन॥स्मितकौटिल्यचापल्याद्द्रोणि
मात्रसधिषु॥मयाकथ्यंविजित्विलसिमन्नपास्तत्रस्वभावतः॥
॥२६॥एतादृशानेत्रनिमेरसासमुद्र४रसकेउद्वेजनसमुद्रहते
तामेएकतोमंदहासामृतरसकोसमुद्र॥दोसरोताऊपरको
टिल्यरसामृतसमुद्रतीसरोतापरचापल्यामृतरसकोसमुद्र
चारोश्रमकणिमामृतरससमुद्रधइहचारिधर्मस्वरूपअमृत
निकेरससमुद्रविषेएकहीवारडूब्योहो–सोनक्रकयोंक

Department of Shri Gusainji Research Centre
Shri Gatulalji

रिजीवतहेतहांकहतहेजोनिनितिन्हकनिकोतेसोईसहजस्व
भावपरिणयोहेजोएतादृशचारित्ररससमुद्रकेतठेलमेंबूडी
रहेहेसोहीजीवनाहीतोक्षणएकमेंनाशहोइमीनकीनांई॥औरहं
नेत्रनिमेकहाहेसोकहततहे॥शृंगाररससर्वस्वंनक्रवाचागुसो
वतिं॥अनुरागस्यंताराश्चैत्यापांगेविनन्यसौ॥२७॥वाकुरके
नेत्रनकेताराकेबीचसर्वस्वजोताराभेंकीआधिदेक पूतरी
हेसोतोवाकुरउन्नरदलधर्मरहे॥ताकेसवओरतारारूपशांत
शृंगारकोरससर्वस्वहे॥औरताकेसवओरजोश्वेतडोरेहेसो

डोरेश्वेतननहोइसोकहाहेव्रजजनक्कनिकेनावामृतकरिआवृतहे
अमृतश्वेतहोतहेताकेएकादशानेत्रनिकेदोऊअंचलकया
सओरकहेसोवाकुरकेहृदयमेंजोअनुभावरागकोसमुद्रहे
सोनेत्ररूपदरवाजेकीझीरीहे॥ओरहूंअंचलकटाक्षपा
दृशाशृंगाररसनावामृतरसअनुरागामृतरसकरिदोऊअत्यभ
रेहे॥२७॥फिरिनेत्रनिपराजयकीयेहेकंदर्पआदिकोंसोकह
तहे॥सालिकुलंकमलकुलंजितंनिजालोकमात्रतोजगनिभगटानि
गूढस्मरजितोनवत्कुसुमसरस्कोटि:॥ ॥ ॥२८॥एता

रत्रानेत्रकेआकारभायनेत्रोत्रिजगतकेकमलकेसमूहसाथ्यजोतिपराजयकरितुछकरिडारतहे। औरनेत्रनिमेजोकामसूत्रकअलांसगूढरसभावकेतरप्रकटकरतहेताकरितोजीतेजातहेकोटिकंदर्पकोतुछकरतहे॥२८॥ फिरिनेत्रकेसेहेनिपटस्नेहकरिः

स्निग्धतामुग्धतावापिचातुरीसहजापिवा॥ नैववर्णयितुंशक्यानुनवंतीनिरखहो॥ ॥२९॥

फिरिनेत्रकेसेहेनिपटस्नेहकरिस्निग्धतासचिक्कनता॥ औरअथवासुग्धतामुग्धतावातिसुंदरहूहे अथवासहजस्वभावकेचातुरीप्रकृतिप्रकृतिप्राकृतिनहीं

26.5

Department of Shri Gusainji
Pt. Gattulalji Research Centre
Shri Gattulalji
www.vallabhacharya-agnikhara.org

चातुर्यैकनिदानसीमचपलापांगछटामंथरं ।लावण्यामृतवीचिलो
लितदृशंलक्ष्मीकटाक्षादृतं ।कालिंदीपुलिनांगणप्रणयिनंका
मावतारकुरं ।बालंनीलममीवयंमधुरिमास्वारातामाराध्नुवः का
रुण्यकर्बुरकटाक्षनिरिक्षणेनतारुण्यसंबलितशैशववैभवेन
आपुष्णताभुवनमद्भुतविभ्रमेणश्रीकृष्णचंद्रशिशिरीकुरुच
लोचनंमे ।एतादृशापरमकाष्टापनसौंदर्यस्निग्धहेजोअनुभव
करनवारीकरिकुंवरणनकेरिवेकुंशक्यनाही ।उनकेहूमनओ
रवचनकोविशयनाही।अमकुंएकअनुभावकरहीवेयहहे ।२५

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhacharya-adhahara.org

फिरिनेत्रकैसेहैं॥सान्द्रगोकुलतरुणीतढवनवप्रावोस्वरास संजात
रतिरससुधाब्धिपतितभ्रवंते निसर्गमधुरतरा॥२०॥ अ॥मेएसेमानत
हैंतेश्रीगोकुलकीजोवनतरुणीनकेनूतननूतनअनेकभावजेनित्य
अगनरसरमणतेंभावउपजेहैं॥ कैसेहैंतेभावजोरतिरसस्वरूपजोसु
धासमुद्रमेंनेत्रपडेडूबेरसमेंपागेसहजअत्यंतसोंदर्यमधुरमधु
रंनयनंमधुरंसहजहींनकोरकरतहैं॥२०॥ फिरिनेत्रकैसेहैंरसज्ञप
हैं॥सन्मुखप्रहणपांग॥प्रहणोच्चयपत्र्यारसज्ञानप्यारुणास्तिहरवाभिज्ञ
पयसभुजेक्षणा॥ अ॥वाकरकेनेत्रसंमुखप्रहणनोनातो॥रसज्ञहैं॥सन्मुख

27.5

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji
www.vallabhacharya...ra.org

देखनेंसेन्मुखदेखिरहैनेमेंलीनहोनेकोनावहे॥ औरकटाक्षकरिति
रहेदेखनमेंभ्रमरकामत्तकुधकस्तचकमावनस्योहेन्यारोन्यारोदोइ
भकारकोमहारसहेजेसें॥ तेसेमेलडोरेपरआरक्तसोन्नाम्यसोदश
सीवारेखाहे॥ ताकरिनेत्रकमलजनावतहेजोयम्येहतनाइधोचल
वीआरक्तरेखाहेसोशेकभकारकेरसवीचओडओरहेजनावत
हे॥२९॥ फिरिनेत्रनिमेंन्यारीआरक्तरेखाकोवरणनकरतहे
॥विशालारुणरेखांनिसितगर्भस्यनेत्रयोआविर्नावित्तियात्रीभांतानव
कुंदमारमा॥३१॥ दोऊनेत्रनिकेस्वेतहीकेगर्भमेंवीचन्यारीन्यारी

अस्मणरेखा हे मघन नाही सो विरल अस्मणरेखा कहिवेको कोऊ । एक
अनिर्वचनीय सोभा की सीव प्रगट होति है लोकदृश सोभा कहिवेको
लक्ष्मीहूको सामर्थ्य नाही तो कहीलों कहीगे जो इहां लक्ष्मी का कह
नेको तात्पर्य कहा कहत तहे सोकु रअंबुजे लक्षण हे ता तेने कहत मते
कहे तो लक्ष्मी कमलालय हे कमलमें लक्ष्मीको निवास हे तासें क
मलालय लक्ष्मीको नाम हे तातें कमलाके रसकी अनुभव करनवारी
परम रसरूप लक्ष्मी हे तो लक्ष्मीहूं को कहिवेको सामर्थ्य नाही तो 28.5
दूरे ॥ काहूकी कहिवेकी सामर्थ्य नाही होय यामें कहा कहिवे हे

३१। ठाकुरके नेत्रकी वरुणीको वर्णन ॥ पक्ष्मालिनिस्सरणीनावाना
नितुनयनाब्जयोः ॥ करांगुलीचयान्नानिस्सरंतं परितोवृत ॥२४॥
ठाकुरके नेत्रकी जो वरुणी सो यह वरुणी ना होती तो कहा है सबव्र
रदो कब्रासपास नेत्रके निहायथा ने अंगुरीयनके समूहकुं नेत्रोंव
श्रानासत है ता अंगुरीनेकरि व्रजजनरुणीके अनेकनाथकुं अकुं
रदोऊ नेत्रकासजमें छूटि सूटिजाइ संवयकरतेहे ॥ खेदकरिक
हतहेंसो हायहाय विचारीयो केनासेसोऊ हाथकरि इन नक्षानि
कों विवेक धैर्य और लज्जा जो श्रीयाको सर्वस्व है सो छूटि लेतहे

औरर्षपद्म विशेष रहे जो हाय हाय कछु सौंदर्य सीमा नेत्र की वरुणी
हे मधुरं मधुरं मधुरं ॥३३॥ अब नेत्र की सरसता कहत है। अतिसारस्य
नो नेत्र सरसो परितो भवतू ॥ रसांकुरा पद्म रूपा नास्यं ते सुषमास्य
द्रः ॥३४॥ अत्यंत नेत्र की सारसता कहत है कमल तो जहां यह रे नके
की सरसता होइ न तहां एक रहो इता तें नेत्र कों रस को सरोवर रस सं
युक्त कहत हैं जो ता के आस पास सब ओर रस के अंकुर हो त है
सो अंकुर रही वरुनी रूप नासत है के सो हैं वरुनी रूप अंकुर सक
ल सौंदर्य सोभा को ठिकाना है ॥३५॥ अब नेत्र की नी मिरव कहा

29.5

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalaji Research Centre www.vallabhacharyagrahara.org

कहतहे ॥ आदायादाम नक्कानाभवानतिमनोहरान् । निमेषमि
षतःस्यात्संचयंकुरुतेमुदा ॥ ३५ ॥ कदाचित्कहेनेत्रमेस्थानमे
रत्नकोंहे कुंकरतहेतहा कहतहे ॥ जोपद्मनिमिषकोएकनिमि
षमात्रकरिनेत्रनिकेआस्थितमनोहरसर्वस्मरस्वच कश्यपादु
पदस्यकटिकुरत्नायन्यायकेनेत्रहर्षसंयुक्तनाथुनेनीलर
त्नावनिकोंएकत्रसंचयकरतहेएकवारत्नावत्न हिलाइनील
रपेहुछोडिवाहरि ॥ आइफिरिवलिलेगयेयहमेरवानमेरव
कोमिरवहे ॥ ३५ ॥ यहजोनेत्रकहतहेसोमेनाहीजाननजोकीयो ॥ ३० ॥

चाहतहे ॥ स्वतःसामर्थ्यमप्येनत्रिलोकीमोहनेपिच ॥ स्मितसहाय्यं
संप्राप्ययःकरोतिनिनवेक्षितन्तु ॥ ३४ ॥ यहजेगोपीकेंनाहीजानतजोए
ताहृशवेत्रकमलनिकोंत्रिलोकीकोंमोहनकरिबेकोंआपुतेंस
तःसर्वसामर्थ्यहेऊतानपरांतऊंवाह ॥ क्योंखेदकरिवेहतहे
जोनेत्रमंदहास्यकुसम्यकूसहायकुपायकरिकेभ्रूच्छनिवे
चनैकरतहेताकुंमेनाहीजानतजोऔरकहाकरेगे ॥ ३५ ॥ नेत्रोकेरस
केपूरकोकिहाकरेगेसोकहतहे ॥ रसपूरैःप्लावयतिस्वजनंवि
विक्तरूपाध्वनिरथवातानेवतन्नाशिषुमयानुकुरुतेनंदेवेन ० न्द

२७॥ आपुनेजननोस्वामिनीयो निनके विवेक ओर आज्ञा ओर
धीर्य यह तीनोंकुं आपुने नेत्रनि के मदारस केणताहश्रा पूरकर विवे
कादिनोंवहाइ आगेके अर्थतें न कहुं तो तमहारस समुद्र के पूर
कोरिवेकादिकुं तवहीड वारतहोय हदोकुनिमेकहाकरतहो
तुमकुं पूछति हूं ॥ २७॥ कदाचित्कोऊ कहो जो एताहू शंकु पर
कार्य सव कहे ताहझाकरण विरवेंहूं कदाचित् दीअ रहे प्रतिबंधक
हेतहां निवारण कहां तहे ॥ एतत्कार्यसर्वने प्रतिबंधेपि वेश्वरः
नश्चात्को प्रतिबध्योयन्नत्स्वनामावखनावतः॥२८॥ आगेजोवद्ध्य ॥२९॥

माणकहेगेतोकार्यकह्योनेविखेकदाचित्प्रतिबंधजोकटेईश्वर
हेयहइच्छाकोतहांकहतहे॥ईश्वरइच्छाप्रतिबंधहेजोंतेकाहे
तेजोभाकुरतोजोकछूयहेकार्यकरणमेंप्राप्तुकछूऔरकरतहो
इतोकदाचित्नकरेहेऔरप्रतिबंधहोइतोकह्योहे॥एनतुश्र
श्रीवांकटितटतात्पर्यदत्रिभंगपराद्दलवक्रऔरसुखलावण्य
औरएतादृशधर्मविशेषणविशिष्टस्वरूपहेंखतमाद्याविवे
कथंयलज्ञाम‹खवहिजातहेतवएतादृशाविंभगरूपकोसह
जस्वभावहीएतादृशहेजोहेप्राप्ततनेविखेंनकछूकीयेहो

31.5

नकनिकोंओरसबप्राणीमात्रकोस्थावरजडोंकुचलताभिनीनाव
रिरसउपजतहे।यहोछिन्नद्रुममृगापुलकावलिचित्रतरसन्नावपक
टकरतहे।खलितद्भावहोतहे।हरिरूपनज्ञाकोतिकरतुवाधाकु
तोपरेयास्वरूपकोसहजस्वभावदेखाहे।तहांऊवक्रस्योकहते
।।तत्रापिचेत्सुमहायशःउदारोवेणुनिस्वनः।।त्रिजगत्र्युत्रिजगति
नजानेकारस्याववज्ञाः।।२५।।वक्रस्योगनेउपरांगहूयचारिपदा
र्थसहायकुंहोयएकतोगनेविनाक्षपावविशिष्टनेत्रकमलेत्यप
रिफिरिमंदहास्यपरफेरिवाकपरावृत्ततापरेफेरिव्यक्रमधु

Department of Shri Gusainji
Shri Gatulalji Research Centre
Pt. Shri Gatulalji Research Centre

रवेणुरुल्ललितमं॥४॥ यहचारिहूजनवसहायकुंहोसबतोनजाणे त्रिलाककीकेसीदशाच्छवश्यहोइपरवशहोतहेजोस्वतंत्रहो इसोआधीनकेसेहोइतडारसोहेएतबहीसिद्धहोहिजनवत्रआधी नहोयअवनक्कानिकोवड़ोही।चितातपजीसोकहतहे॥ त्रिकस्न्यकथै ताहक्कामस्वरूपमति विवितं॥ कचित्परोस्त्ययनाय:कोदसानुजनदा॥४४॥ नजोअबएतादशाविजोकी॥ कीवार्तानजाणेरहो॥ पेएताहृशसौंदर्यताकविनगास्वरूपकुंदेखतमात्रश्रीस्वामिनीयोंकेवितेकुलज्जाधीर्यविहिजातहे औरश्र

32.5

Department of Shri Gusainji Shri Gattulalaji Research Centre www.vallabhacharya-agrahara.org

कंदर्पकोंअत्यंतपेगृहोलहे विरहकरिनस्समाजकरतहेका
मतिनलिकोंनोंजेणेठाकुरनासमर्थ्यहेकामअशांतकरतहे॥कदा
चित्तनोंथआपुआपुनोंताहरतोचेनगस्वरूपकोंकुनख
चंद्रमेआथवाकारूपमतिविवकुंदेखेओरनाथकुकामि
नीनावहोयतोगिरिरसात्रपजेकंदर्पपीडात्रपजावोतवको
नत्रातिगिरसकेकोनकृनकरिसकेतवकहाजानेकोनद
शावोकुनाथनजेकेशादशाहोयजाययहविचारमेपडे
ध०॥ वहधाचाकुरकुआपुनेदर्शनकीअपेक्षानाहीमो

कहतहे ॥ प्रायोदर्शनजापेक्षायत्स्वयतईक्षात्मकः ॥ दिशाहृदयेदनेत्रे
षुनिरधोस्ति सुनायकः ॥४९॥ तहांकहतहेजोवक्रधाठाकुरकुंप्रतिबि
वमेंआपुनेदर्शनकी ॥ अपेक्षानाहीहेसोकोहेनेपातेजोठाकुरआपु
हीश्रीस्वामिनीकोगूढभावकोरपेहीहेयानेंयातेश्रीस्वामिनीजीके
हृदयमेंओरनेत्रनिमेंसुंदरनायकनिरुधरोकिरारव्योहेतातेंठा
कुरकीदसातो ॥ प्रासादेसादिशिदिशिचसापृष्ठतः ॥ सापुरःसापर्यं
केसापथिपथिचसातद्वियोगाकुलत्वाद्होचेतः ॥ प्रकृतिरपरा
नास्तिमेकोपिसासाजगतमसकलेकोयमद्वैतवाद ॥ ठाकुरतोम

33.5

र्वत्रश्रीस्वामिनीजीहीकोंदेखतहे। आपुहूकोराधाहीजानतहेजोमेरा
धाहूराआपसकहीहेताते आपुनेंमनितिविषेंराधाहीकोंदेखतहे
आपुनेंदर्शनकीअपेक्षानाहीएकतोहृदयभीतरहोयताकोप्रति
बिंबहीनपावेदूसरेनोताकेसंनिधिहीमेंनिरुद्धहोइसोतोप्रतिबि
बमेंश्रीराधाहूदेखे॥२४॥ एतादृशतापकोंशांतिकर्ताकोऊनांहीर
सोकहतहे॥ तावत्संदृशानेऽस्यात्समदानावधिएवहितच्छांतिक
र्ताकोन्यत्रेनवेत्तेनास्तिनैवतत॥२५॥ एतादृशात्रिजगपराहृतओ
रस्मितओरवेणुकेदोऊकेसहायसंयुक्तकोंनीकेदेखनेविखेतो ॥२५॥

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji

निश्चयकामिनीभावहोयहीनिरधार।। तबतेउत्कटकामिनीभा
वकेकंदर्पकीशांतिकर्त्ताइहांगऊरइतरिकोणहेएतादृशी
कामनशांतिकर्त्ताकोऊनाहीहीसोप्रसिद्धहे।। एतादृशस्वरूपदे
रवीकरिप्रेमदाभावहोयतोप्रेमदाकेगूढभावतेऊवाकुरसहे
तातेनोइनोभयेतोकामिनिश्रिकीउक्तापासहूसमाजरीराखीतो
भावअतिदृढभयोनातेंतेहीविपरीतविधानेंपुरुषायितनवि
धानेंशांतिकरेओरकोऊहेहीनाही।।४२।। अथवाकामिनीभा
वहूकाहेकौकहिइसरोवख्यानं।। अथवातद्दसन्मानदश

34.5

नेनानिपोषित॥ नवतिस्वाप्रियावृंदेदेवयेद्रसरोव्याख्यान॥ अथ
वातद्रुसत्ताज्ञदर्शनेनानियोषितः॥ नवनिस्वाप्रियावृंदेदेनोय
जगानद्भिव॥४७॥ अथवागाकुरश्रीस्वामिनीजीकेहीरसात्माहे
औरश्रीस्वामिनीजीकेदर्शनरूपरिद्दीअत्यंतपोषितहेपोषितसु
ष्ठहोतहेएतादृशावाक्यसोआपुनीप्राणवल्लभाकोंहृदनिमे
यूथयूथानिमेंआवरेवेष्टितयहगाकुरजंतुरादर्शितआगे
दिखावेतेहैमत्तगजराजयूथपतिकीनाईजलक्रीडाकरतहे
नानियुतःश्रममयोहितमंगलाअंगयष्टिश्रजोस्वकुचकुंकुम ॥३५॥

Department of Shri Gusainji Gatulalaji Research Centre www.vallabhacharya-agrahara.org

रंजितायाः॥ गंधर्वपालिनिरनुद्धतआविर्भावाभ्यां लोगजौ निरिन्न
राडिव निस्तसेतु॥ ४३॥ अथवा व्याख्यांतरं॥ कदाचिदप्यच
प्रेष्ठवियोगात्त्यांतदात्मका॥ तासर्वाविर्भवत्त्वावैरेव तांशंमय
त्यपि॥ ४४॥ अथवा कदाचित् श्री स्वामिनीजी के आत्यंत वियो
ग की आत्यंत आसक्तिसे ठाकुर राधाआत्मिक ही होय जात हे॥ ज
व राधा तद्रूप होत वही मुख माधो माधो रटत हे॥ जव माधो होइ जात
सकल तन राधा विरहे दहे॥

॥ जव वा ठाकुर राधा आत्मिक सो

35.5

Department of Shri Gusainji Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhacharyagrahara.org

तहेंतवतिंनिनक्रनिकुंपुरुषायितनावप्रकटहोइकरविपरी
तविधानकरितेनक्रष्णांतऋकरनहे ॥४४॥ यहस्वरूपवांकरनेन
क्रनिकुंनेत्रप्रकटकीयेहे ॥ इष्टाधीरसरूपत्वंमयिज्ञानंतुमा
मकाः ॥ तदर्थमाविःकृतवांत्रिनगनक्रलोचनं ॥४५॥ पेहेलेंजोको
क्रमेरेतदीयनक्रत्वभगवदीयहेसोमोकोरसोवैसःश्रुत्यादिकेतक
रिमोकोस्वरूपज्ञाननहतोतेपेदेख्योनहीसोक्रष्णनेमोकुंरसस्वरूप
वहारश्राखिनिदिखायोक्रनत्रिनाभिमत्रहीकरिवहत्रिनंग
स्वरूपनक्रनिकोंमेलोचनप्रकटकीयेहेजोयात्रिनगरूपनेत्रक

रिमेरोरससरूपछबरैस्योयवाकुरनहोय।किंतुवाठौररससरूपदेखि
वेकेचित्तनंगोसेनहीहेयहेनेत्रकरिरससरूपवाकुरदेखीये॥अथवाश्री
राधकाजीकेस्वरूपपररीझितीनिरखत्यैहे॥अथवा॥श्रीराधाजूकी
उरविशालपीनघनकठिनकोभेनकटिसूक्ष्मचलतलचकिसवा
करतचकतजातहैऐसेकन्नावंतकोएकदीठकोदियो॥४५॥नक्त
निकोंरसात्मकस्वरूपकुबाहिरसुंदिखावतकुंवाह्यरसंरूपप्रग
टकरतनयेसोकहतहे।रसात्मत्वं स्फुटं स्वामिन्नक्तेनैवानुभूयते
तदर्थमाविःकुरुतेत्रिभंगललितलोचनं॥४६॥पेहेलेमोविषेरसात्म

Department of Shri Gusainji
Pt. Shri Gokulanathji Research Centre

कत्वनीतरमकरहेसोतोयहस्वामिनीकोंकृनीतरहीअनुभवेकवे
यकृतोसोहीअवतेस्वामिनीयोकेवाहरकृसवइडीयोकंआस्वा
दनकरायवेकेहीअर्थरसरूपस्वरूपवाहरप्रगटकरतनयोय
हत्रिभंगस्वरूपनकानिकेलोगनकेतारेहेयास्वरूपकरिमानुषस्व
रूपकोरंतरऔरवाह्यकृअनुभवकरोसवइंद्रियनकरि॥५५॥पु
ष्टिभक्तिकोस्थापनऔरमर्यादाकोउत्थापनऔरपुष्टिकेआश्रि
तनकीरीतीसोकहतहे॥पुष्टिभक्तिंस्थापयित्वात्रमर्यादांचतदाश्रितां
कृत्वावृंदावनक्षोणीमपश्यासर्वसास्थितिं॥५६॥वरणारविंददोऊ

नक्कात्मकहेतामेवामपरावृत्तयुत— स्वामिनीजीकेआगेहे॥तातेवाकु
रनेंश्रुद्धपुष्टिपुष्टिनक्कनिकुंजपुष्टिकेआश्रितकीनोसोकोनसीमयाजा
पुष्टिरसकोपोषकजेसेपरकीयात्वरससंपादकत्वकुंगोपीनसोंविर
हेनावरसकीवृद्धिकुहेआश्रितकरिकेंनापाछेश्रीवृंदावनकोपृथ
वीरूपजोपुरुषोत्तमकोकटिरूपहे॥जेसेवेराटस्वरूपकोकटिस्थ
लपृथ्वीहेतेसेंयहत्रिभंगस्वरूपकोकटिवृंदावनरूपपृथ्वीहे
ताकुंपहेलेंसूधीस्थितहीताकोवामपरावृत्तवक्रीकिनी॥४१॥पु
ष्टनक्ककेज्ञहृदयमेआपुनोहृदयकरिकेमर्यादानक्कनिकुंजपुष्टि

दृश्या विरवें सन्मुख कीये सो कहत हे ॥ हृदयं भक्त हृदयो स्थिरं लोकान्ति
ज्ञान्यराज्ञा पृष्ठिं दिशं पव समुखान्न कृत्वा सं रागतः प्रभुः ४८ वाकूर के वाम
नाग स्वामिनी जू ओहे सो वाकुरने वाम पराव्रत करि आपुनो हृदय पृष्टि
भक्तनि के हृदय में स्थिर कीयो ओर जे में पुरुषोत्तम के वाम अंग देव
ता अलौकिक कइ हे अंग को देवता अलौकिक चंद है ते में आपुनो र
ओर पराये सब चौदा लोक हे ते दक्षिण अंग कू कीयो दा। विरवें सब लो
क हे ते दक्षिण अंग कू लोक सहित पृष्टि दशा को ही पराव्रत सन्मुख
करिके प्रभु सम्यक् विराजत भये ॥४५॥ अव त्रहध शृंगार रस ही वा

Department of Shri Gusainji Shri Gokulnathji Research Centre www.vallabhacharya-agrahara.org

कुरहेसोकहत्तहे॥मूलं॥उद्बुधश्रृंगाररसस्वरूपोभूषणाद्यपिनादृशो
वाखिलांगेषुविभ्रत्संराजतेप्रभुः॥४९॥अबसबस्वरूपवस्त्रआभू
षणसबकोवर्णनकीनोओरमुकटवर्णननाहिकीयोसोकहत्तहे
ठाकुरकोसहजहीउद्बुधश्रृंगाररसराहिस्वरूपहेसोहीरसोवैसइत्यादि
श्रुतिकरिवाकरउद्बुधश्रृंगाररसदोदलात्मकहेसोउद्बुधरसा
त्मकमयूरहेताकोरिवाकुरकोस्वरूपवरह्योप्रायतशिरोभूषण
वस्त्रआभूषणविशेषणविशिष्टहे॥स्वरूपहेजेंसेलीलावशिष्ट
हे॥तातेंन्यारोमुकुटवर्णननाहीकीयोएतादृशास्वरूपधरेंहोंम

38.5

भुः शोकायमान हे ॥४९॥ अब दीनता करि उपसंहार करत हे ॥ श्रुत्याद्य
गम्ययदुपास्यकेन मया कथं ॥ तव विस्मयाभ्युदयाकांत रियस्वाङ्ग
वितर्दी ॥५०॥ अब ललित त्रिभंग रहु धरष्ट गार रस विशेषण विशिष्ट व
रणनननयो ॥ अब श्रीमद्गुसांईजी दीनता दिखावत कहत हे जो
श्रुत्यादि कुं अगम्य जो स्वरूप रसात्मक सो में अल्प करि कह्यो तो क
दाचित् कह्यो तो क्या करि करण न कहि सकत हो कहत हे जो श्रुति
तो वाचि को वेनव देखत हे सो वरणन करत हे अंतरंग लो अगम्य
हे और मे तो तदीय हो अंतरंग दास गूढ करता तो सव ज्ञाने ता कुं नि ॥२८॥

रूपणाकरणविसेंगोकुलाकारहे ॥५०॥ तोहूयहश्रीगोकुलमेंप्रगटवि
राजतहेसोकहियगुहे ॥तथापिश्रीगोकुलेस्मिन्नाविर्भूतोविराजते॥
सान्यत्रनन्दकैरनिशंपीयतेतत्सुधादृस ॥५१॥ तोकहयहदृश्यमानश्री
गोकुलविषेंप्रकटहोयविराजमानहे ॥ औरइहांकेजोनन्दकलोकदिन
औररात्रिकुंजेवाकेरसकोअधरसुधाआसवकुंवत्सलासपीवतहेदृ
श्यमानश्रीगोकुलकुंदिखावतहे ॥५२॥ तेसेंप्रभुकेप्रगटावतेमेंहीर
वात्रिप्रमाणवर्णनकीयोसोःकहतहे ॥ममप्रभुःसदाहंतुत्वत्पाद
भुरजोस्मिवै ॥तत्स्वरूपावधाघ्यावक्रिवर्णयाम्यविचारयन् ॥५३॥ मे

39.5

Department of Shri Gusainji Pt. Shri Gattulalji Research Centre www.vallabhacharyasahityabhandara.org

रूसो ठाकुर के चरणकमल की एक रेणु रूं अथवा श्रीस्वामिनीजी के चर
णकमल की एक रेणु रूं अथवा उपक्रम के अनुरोध करि श्रीमदाचार्य
चरणकमल की एक रेणु रूं । और मो ऐसे मनुः है सो यह तो निश्चय है जो ता
तें तिनाकी चरणरेणु को प्रभाव सो है मानें जेसी मेरी शक्ति अनुसार अवि
चारित वर्णन कीनो कछू विचार करि नाही कीनो ॥५१॥ अह च तस्या
द्यपद्मरेणुत्वमीतिमन्मनुः ॥ सचास्ती नियमाच्छक्ति वर्णयाम्य
विचारयन् ॥५२॥ यातें उपर के श्लोक को अर्थ तें साही एक तात्पर्य है
तातें याको अर्थ न्यारो नाही लिख्यते ॥ माथना कहत हे ॥ स्वतो महत्ता

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji
www.vallabhacharyasagrahara.org

वनमनोवृत्तिर्वृंदावनेनप्रभुः ॥ वृहद्वनप्रियः स्वास्वकिशोरीकृतला
त्स्वनः ॥५४॥ ठाकुर के से हैं जा कुं श्रीवृंदावन और श्रीवृहद्वन गुप्त औ
र मगणर भए स्थलने अत्यंत प्रिय न है सो निरंतर एतादृश प्रभु विखे आप
ने व्यसनतः मेरे नेत्र और मन की वृत्ति मे हों देखुं और तुम आपने मेरो ह
दय और नेत्र लीन करो दोऊ रस की प्रार्थना ॥ हृदयं विरहत्तवेक्षती
नं दंनदशो व्रजनाथ किं करोमि ॥ नहि कोपि परस्पर विरोधोत्यजन्ति
स्वार्थमतिप्रवीणोपि ॥५४॥ और प्रार्थना ॥ अहत्तदीयइत्येषातवाचा
रूपितापरं ॥ तेन प्रसन्नो न तनुया सो श्रीविठ्ठलेन प्रभुः ॥५५॥ मेनु मारो

40.5

Department of Shri Gusainji Research Centre
Pt. Shri Gattulalji
www.vallabhacharya-agnihara.org

त्रि०ल०टी०
॥४१॥

कृपाकरियहतुमारीवार्त्तानिरूपणकीनीउत्कृष्टकृपाकरिहेप्रभु
तुमश्रीविठ्ठलेश्वरदासविरवेभसन्तहो॥५६॥ ॥इतिश्रीविठ्ठलेश्व
रचरणविरचितश्रीललितत्रिभंगनामकउत्तरदलरसात्मकस्व
रूपवर्णनसंपूर्णम्सुसमाप्तम्॥ संवत्१८५८नाववर्षेमासोत्तमेमा
र्गशीर्षमासेशुक्लपक्षेतिथौ२मंदवासरेलिषितंगवा[illegible]गोस्मुनंभ०
॥ ॥श्रीः॥ ॥कृ॥ ॥श्रीः॥ ॥कृ॥ ॥श्रीः॥ ॥कृ

म्हा०५५०

॥४१॥